अमर उजाला

एम्स में स्तनपान के प्रति किया जागरूक

संवाद न्यूज एजेंसी

ऋषिकेश। स्तनपान संवर्धन एवं जनजागरूकता अभियान के तहत एम्स में कार्यक्रम आयोजित कर माताओं और तीमारदारों को स्तनपान के तौर-तरीकों व मां-शिशु के लाभों की जानकारी दी गई।

नुक्कड़ नाटक के माध्यम से भी जागरूकता फैलाते हुए समाज के अन्य वर्गों को संदेश देने का आह्वान किया गया।एम्स निदेशक प्रो. मीनू सिंह ने कहा कि देश में स्तनपान की दर लगातार घट रही है और उत्तराखंड में स्थिति अत्यधिक नाजुक है।

उन्होंने स्तनपान के लिए परिजनों के सहयोग और अनुकूल घरेलू माहौल को जरूरी बताया। नवजात शिशु विभागाध्यक्ष प्रो. डॉ. श्रीपर्णा बासु ने मां के दूध को अमृत तुल्य बताया। विजेता प्रतिभागियों को किया सम्मानित विश्व स्तनपान सप्ताह के तहत आयोजित नुक्कड़ नाटक में चंद्रसेन जाटव, मंजू शर्मा, ज्योति कुमारी, चांदनी बानो, कुमारी दिव्या व

एम्स में आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभागी को सम्मानित करतीं निदेशक प्रो.मीनू सिंह। एम्स

माकानी राधिकाबेन को सम्मानित किया गया। पोस्टर प्रतियोगिता में सताक्षी, पायल व दिव्या व राखी नर्सिंग ऑफिसर ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इसी प्रतियोगिता में अपने नवोत्थान रचनात्मकता सम्मिलित पोस्टर के लिए बालरोग विभाग की रिसर्च साइंटिस्ट डॉ. मोना शुक्ला को विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया। नर्सिंग क्विज प्रतियोगिता में टीम- ए में श्रुति गुप्ता, रिया, मानसी चहल व साक्षी ने प्रथम, टीम- बी में आस्था, दिषा, दीपिका, सुषमा, मनीषा ने द्वितीय व टीम- सी जगदीश, लीना, दीक्षा , ज्योति व पलक ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। एमबीबीएस स्नातक क्विज में 2022 बैच ने प्रतिभाग किया जिनमें पर्ल डोगरा और प्रशंसा अव्वल रहे।

प्रधान टाइम्स

जन्म के पहले घंटे में मां का दूध शिशु के स्वास्थ्य की मजबूत नींव

शिशु-मृत्यु दर को कम करने के लिए स्तनपान के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव जरूरी

ऋषिकेश। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान एम्स ऋषिकेश के सामुदायिक चिकित्सा विभाग के तत्वावधान में विश्व स्तनपान सप्ताह मनाया गया। सप्ताह भर तक चले इस जागरूकता सप्ताह के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों के जरिए शिशु के स्वास्थ्य के लिए मां के दूध के महत्व पर विशेष जोर दिया गया कार्यक्रम में बताया गया कि इस वर्ष विश्व स्वास्थ्य संगठन डब्ल्यूएचओ द्वारा सतत जीवन की शुरुआत के लिए स्तनपान को कायम है उसे मजबूत करें थीम निर्धारित की गई थी।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि और एम्स की कार्यकारी निदेशक प्रो. डॉ.मीनू सिंह ने अपने संबोधन में स्तनपान को शिशु सुरक्षा का पहला और सबसे महत्वपूर्ण चक्र बताया। प्रो. मीनू सिंह ने कहा, शिशु और बाल मृत्यु दर को कम करने में स्तनपान की भूमिका सबसे अहम है।

मां का पहला गाढ़ा दूध कोलोस्ट्रम शिशु के लिए प्राकृतिक टीके के रूप में काम करता है, जो उसे जीवनभर गंभीर बीमारियों से बचाता है। उन्होंने कहा कि समाज में इस विषय को लेकर केवल माताओं को नहीं, बल्कि पूरे परिवार को

जागरूक करने की जरूरत है ताकि कामकाजी माताएं भी बिना किसी बाधा के स्तनपान जारी रख सकें कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित डीन एकेडमिक्स प्रो. डॉ. सौरभ वार्ष्णेय ने कहा, स्तनपान के लाभों को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने में हमारे मेडिकल विद्यार्थियों और युवा डॉक्टरों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि चिकित्सा शिक्षा में इस विषय पर लगातार शोध और व्यावहारिक प्रशिक्षण की भी आवश्यकता है। हमारे नवोदित डॉक्टरों को भविष्य में क्लीनिकल प्रैक्टिस के साथ-साथ इस सामाजिक जागरूकता अभियान का नेतृत्व भी करना होगा, ताकि कुपोषण मुक्त समाज की परिकल्पना को साकार किया जा सके सामुदायिक चिकित्सा विभागाध्यक्ष प्रो. डॉ. वर्तिका सक्सेना ने बताया कि जन्म के पहले घंटे में स्तनपान और शुरुआती छह महीनों तक केवल मां का दूध ही शिशु के स्वस्थ जीवन की असली नींव है। इसे सफल बनाने के लिए परिवार, स्वास्थ्य तंत्र और कार्यस्थल वर्कप्लेस का सहयोग बेहद अनिवार्य है। विशेषज्ञों ने बताया कि अस्पताल में सुरक्षित प्रसव (संस्थागत डिलीवरी) की दर 80 प्रतिशत से अधिक होने के बावजूद, जागरूकता की कमी के कारण केवल 40 प्रतिशत माताएं ही जन्म के पहले घंटे के भीतर शिशु को स्तनपान करा पाती हैं। इस अंतर को पाटने के लिए बड़े पैमाने पर जागरूकता की जरूरत बतायी गयी।

काम भी, मां भी विषय पर अनूठी पहल

ऋषिकेश। जागरूकता सप्ताह का समापन प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पीएचसी रायवाला में हुआ। इस मौके पर इंटर्न चिकित्सकों ने एक शानदार नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत कर स्तनपान से जुड़ी सामाजिक भ्रांतियों पर प्रहार किया। साथ ही स्तनपान कराने वाली पत्नी के सहयोग में पति की भूमिका पर व्याख्यान भी दिया गया। कार्यक्रम में क्षेत्र की 18 से अधिक आशा कार्यकर्ताओं ने भाग लिया, जिनमें से उत्कृष्ट कार्य करने वाली आशाओं को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डॉ. स्मिता सिन्हा, डॉ. गार्गी पांडेय, डॉ. एकता पाठक, डॉ. नीलांजन सहित विभाग के कई डॉक्टर्स और मेडिकल छात्र उपस्थित रहे।

चिंगारी

शिशु और बाल मृत्यु दर कम करने में स्तनपान की भूमिका अहम : डॉ. मीनू सिंह

राजेश शर्मा

ऋषिकेश (चिंगारी)। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के सामुदायिक चिकित्सा विभाग के तत्वावधान में 'विश्व स्तनपान सप्ताह' मनाया गया। सप्ताह भर तक चले इस कार्यक्रम के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों में शिशु के स्वास्थ्य के लिए मां के दूध के महत्व पर विशेष जोर दिया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि और एम्स की कार्यकारी निदेशक प्रो. डॉ. मीनू सिंह ने कहा कि स्तनपान शिशु सुरक्षा का पहला और सबसे महत्वपूर्ण चक्र है। शिशु और बाल मृत्यु दर को कम करने में स्तनपान की भूमिका सबसे अहम है। मां का पहला गाढ़ा दूध कोलोस्ट्रम शिशु के लिए प्राकृतिक टीके के रूप में काम करता है, जो उसे जीवनभर गंभीर बीमारियों से बचाता है। उन्होंने कहा कि समाज में इस विषय को लेकर केवल माताओं को नहीं, बल्कि पूरे परिवार को जागरूक करने की जरूरत है।

विश्व स्तनपान सप्ताह

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि डीन एकेडमिक्स प्रो. डॉ. सौरभ वार्ष्णेय ने कहा, स्तनपान के लाभों को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने में हमारे मेडिकल विद्यार्थियों और युवा डॉक्टरों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारे नवोदित डॉक्टरों को भविष्य में क्लीनिकल प्रैक्टिस के साथ-साथ इस सामाजिक जागरूकता अभियान का नेतृत्व भी करना होगा। सामुदायिक चिकित्सा विभागाध्यक्ष प्रो. डॉ. वर्तिका सक्सेना ने बताया कि जन्म के पहले घंटे में स्तनपान और शुरुआती छह महीनों तक केवल मां का दूध ही शिशु के स्वस्थ जीवन की असली नींव है। विशेषज्ञों ने बताया कि अस्पताल में सुरक्षित प्रसव (संस्थागत डिलीवरी) की दर 80 प्रतिशत से अधिक होने के बावजूद, जागरूकता की कमी के कारण केवल 40 प्रतिशत माताएं ही जन्म के पहले घंटे के भीतर शिशु को स्तनपान करा पाती है। इस अंतर को पाटने के लिए बड़े पैमाने पर जागरूकता की जरूरत बतायी गयी।

नुक्कड़ नाटक से भ्रांतियों पर किया प्रहार

जागरूकता सप्ताह का समापन प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पीएचसी रायवाला में हुआ। इस मौके पर इंटर्न चिकित्सकों ने नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत कर स्तनपान से जुड़ी सामाजिक भ्रांतियों पर प्रहार किया। कार्यक्रम में क्षेत्र की 18 से अधिक आशा कार्यकर्ताओं ने भाग लिया, जिनमें से उत्कृष्ट कार्य करने वाली आशाओं को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डॉ. स्मिता मिश्रा, डॉ. गार्गी पांडेय, डॉ. एकता पाठक, डॉ. नीलांजन सहित विभाग के कई डॉक्टर्स और मेडिकल छात्र उपस्थित रहे।

समगंगा प्रकाशन बिजनौर के लिए प्रकाशक, मुद्रक सूर्यमणि रघुवंशी ने रघुवंशी प्रिंटर्स, स्वप्न लोक, नई बस्ती बिजनौर में मुद्रित कराकर स्वप्न लोक, नई बस्ती, बिजनौर से प्रकाशित किया।
संस्थापक-स्व. बाबू सिंह चौहान।
सम्पादक-सूर्यमणि रघुवंशी।
आर. एन. आई. नं. 2417/57
डाक पंजीकरण संख्या- डी.एन./ यू.पी./ बी.जे.एन-14/2025-27
E-Mail: dainikchingari@gmail.com

संवाद न्यूज

जन्म के पहले घंटे में मां का दूध शिशु के स्वास्थ्य की मजबूत नींव : प्रो. मीनू

संवाद न्यूज एजेंसी

ऋषिकेश। विश्व स्तनपान सप्ताह के तहत एम्स के सामुदायिक चिकित्सा विभाग की ओर से कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान वक्ताओं ने कहा कि जन्म के पहले घंटे में मां का दूध शिशु के स्वास्थ्य की मजबूत नींव है।

शिशु-मृत्यु दर को कम करने के लिए स्तनपान के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव की आवश्यकता है। एम्स में मंगलवार को आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ निदेशक प्रो. मीनू सिंह ने किया। उन्होंने कहा, शिशु और बाल मृत्यु दर को कम करने में स्तनपान की भूमिका सबसे अहम है।

मां का पहला गाढ़ा दूध (कोलोस्ट्रम) शिशु के लिए प्राकृतिक टीके के रूप में काम करता है, जो उसे जीवनभर गंभीर बीमारियों

शिशु मृत्यु दर को कम करने के लिए स्तनपान के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव जरूरी

से बचाता है। उन्होंने कहा कि समाज में इस विषय को लेकर केवल माताओं को नहीं, बल्कि पूरे परिवार को जागरूक करने की जरूरत है ताकि कामकाजी माताएं भी बिना किसी बाधा के स्तनपान जारी रख सकें।

डीन (एकेडमिक्स) प्रो. (डॉ.) सौरभ वार्ष्णेय ने कहा स्तनपान के लाभों को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने में हमारे मेडिकल विद्यार्थियों और युवा चिकित्सकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि चिकित्सा शिक्षा में इस विषय पर लगातार शोध और व्यावहारिक प्रशिक्षण की भी आवश्यकता है। सामुदायिक चिकित्सा विभागाध्यक्ष प्रो. डॉ. वर्तिका सक्सेना ने बताया कि जन्म के पहले घंटे में स्तनपान और शुरुआती छह महीनों तक केवल मां का दूध ही शिशु के स्वस्थ जीवन की असली नींव है। इसे सफल बनाने के लिए परिवार, स्वास्थ्य तंत्र और कार्यस्थल का सहयोग बेहद अनिवार्य है।

काम भी, मां भी विषय पर अनूठी पहल

जागरूकता सप्ताह का समापन प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र रायवाला में हुआ। इस मौके पर इंटर्न चिकित्सकों ने नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत कर स्तनपान से जुड़ी सामाजिक भ्रांतियों पर प्रहार किया। साथ ही स्तनपान कराने वाली पत्नी के सहयोग में पति की भूमिका पर व्याख्यान भी दिया गया। कार्यक्रम में क्षेत्र की 18 से अधिक आशा कार्यकर्ताओं ने भाग लिया, जिनमें से उत्कृष्ट कार्य करने वाली आशाओं को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।